न पावकः। यद्गत्वा न निर्वतन्ते तद्धाम परमं मम।। जो उस परम धाम को प्राप्त हो जाता है, उसका संसार में पुनरागमन नहीं होता। चन्द्रमा की तो बात ही क्या, संसार के परमोच्च लोक (ब्रह्मलोक) में पहुँच जाने पर भी जीवन की समस्याओं (जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि) का सामना करना होगा। प्राकृत-जगत् का कोई भी लोक इन चार कष्टों से मुक्त नहीं है। अतएव श्रीभगवान् भगवद्गीता में कहते हैं— **आब्रह्म भुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।** जीव अप्राकृत-पद्धति से एक लोक से दूसरे में गमन कर रहे हैं, किसी संयन्त्रीय व्यवस्था से नहीं। यह भी उल्लेख है: **यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन् यान्ति पितृव्रताः।** अन्तर्लोकीय-यात्रा के लिए किसी संयन्त्रीय व्यवस्था की अपेक्षा नहीं है। गीता कहती है: **यान्ति देवाव्रता देवान्।** चन्द्रमा, सूर्य जैसे उच्च लोक स्वर्ग कहलाते हैं। लोकों की उच्च, मध्यम और निम्न, तीन कोटियाँ हैं। पृथ्वी मध्यवर्ती लोक है। भगवद्गीता हमें सूचित करती है कि देवलोक में गमन करने की पद्धति अति सुगम है: **यान्ति देवव्रता देवान्।** वाँछित लोक के अधिष्ठातृ देवता की उपासना करने से चन्द्र, सूर्य, आदि किसी भी उच्च लोक में जाया जा सकता है।

परन्तु भगवद्गीता हमें इस प्राकृत-जगत् के अन्य लोकों में जाने का परामर्श नहीं देती। किसी संयन्त्रीय विधि से चालीस हजार वर्ष तक (इतने वर्ष तो जीवित रहना ही असम्भव है!) यात्रा करके यदि हम संसार के सर्वोच्च लोक (ब्रह्म-लोक) को प्राप्त कर भी लें, तो भी जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि से मुक्त नहीं हो सकेंगे। इन दुःखों से हमारी मुक्ति तभी होगी, जब हम परम धाम कृष्णलोक अथवा परव्योम के किसी वैकुण्ठ धाम को प्राप्त कर लें। परव्योम के लोकों में एक गोलोक-वृन्दावन नामक परम धाम भी है। यही आदि लोक भगवान् श्रीकृष्ण का स्वधाम है। यह सम्पूर्ण जानकारी भगवद्गीता में उपलब्ध है। इसके द्वारा हमें उपदेश दिया गया है जिससे प्राकृत-जगत् को त्याग कर हम भगवद्धाम में सच्चा आनन्दमय जीवन प्राप्त कर सकें।

भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्याय में इस संसार का यथार्थ चित्रण है—

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।

श्रीभगवान् ने कहा, 'इस संसारी रूप पीपल के वृक्ष का मूल ऊपर की ओर है और शाखाएँ नीचे की ओर हैं तथा वेद इसके पत्ते कहे गए हैं। जो इसे जानता है, वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है।' (भगवद्गीता १५.१) इस श्लोक में प्राकृत-जगत् को एक ऐसे पीपल के वृक्ष की उपमा दी गई है, जिसका मूल ऊपर की ओर है तथा शाखाएँ अधोगामिनी हैं। किसी नदी अथवा जलाशय में प्रतिबिम्बित वृक्ष उलटा दीखता है, शाखाएँ नीचे हो जाती हैं और मूल ऊपर की ओर दिखाई देती है। इसी प्रकार यह प्राकृत-जगत् वैकुण्ठ-जगत् का विकृत प्रतिबिम्ब है—सत्य की छाया मात्र है। छाया में चाहे सचाई अथवा साखत्ता नहीं होती, पर उससे सच्चे